Ajeeb Azmaish (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 454
Weekly Booklet : 454

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 37 साल पहले का बयान

अ़जीब आज़माइश

(सफ़ह़ात : 18)

सब्र अव्वल सदमे पर होता है 06
हुसूले माल के लिये दीन दाव पर 12
इन्सान के तीन माल 14
बेटे को नर्मी से समझाने पर पकड़ 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

अजीब आज़माइश[1]

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला "अजीब आज़माइश" पढ़ या सुन ले उसे एहसान फ़रामोशी व नाशुक्री से महफ़ूज़ फ़रमा और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً यानी क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा। (ترمذی، ص144، حدیث:484)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा, जो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर की हमराही नसीब होने का ज़रीआ दुरूद शरीफ़ की कसरत है। इस से मालूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और उस से बज़्मे जन्नत के दूल्हा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मिलते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 2/100)

हश्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं रज़ा
लौट जाऊं पा के वोह दामाने आली हाथ में

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 104)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

[1] ... येह बयान शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 15 ज़ुल क़ादतिल हराम 1408 हि. ब मुताबिक़ 30 जून 1988 ई. को दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ जामेअ मस्जिद गुल्ज़ारे हबीब में आशिक़ाने रसूल के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के शोबे "बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

अ़जीब आज़माइश

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने बनी इसराईल के तीन आदमियों को आज़माया, उन में से एक कोढ़ी था (जिसे जुज़ामी भी कहते हैं), दूसरा गंजा और तीसरा अन्धा।

चुनान्चे अल्लाह पाक ने एक फ़रिश्ता इन्सानी शक्ल में उन तीनों के पास भेजा, वोह फ़रिश्ता पहले कोढ़ी के पास आया और उस से पूछा : तुम्हें सब से ज़ियादा क्या चीज़ पसन्द है ? उस ने कहा : मुझे ख़ूबसूरत और दिल आवेज़ रंग और जिस्म की बेहतरीन खाल चाहिये क्यूंकि जुज़ाम की वज्ह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं। फ़रिश्ते ने उस जुज़ामी के बदन पर हाथ फेरा तो उस की बीमारी एक दम जाती रही और उसे निहायत दिलकश और ख़ुश रंग खाल दे दी गई। फिर फ़रिश्ते ने मज़ीद सुवाल किया : तुम्हें किस क़िस्म का माल ज़ियादा पसन्द है ? उस ने ऊंट या गाय का कहा।[1] उसे दस माह की एक गाभन (ह़ामिला) ऊंटनी दे दी गई और फ़रिश्ते ने उसे दुआ़ दी कि अल्लाह पाक तुझे इस में बरकत दे।

इस के बाद फ़रिश्ता गंजे के पास आया और उस से पूछा : तुझे कौन सी चीज़ सब से ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : ख़ूबसूरत बाल मुझे सब से ज़ियादा पसन्द हैं और येह गंज मुझ से दूर हो जाए जिस के बाइ़स लोग मुझ से नफ़रत करते हैं। फ़रिश्ते ने उस के सर पर हाथ फेरा तो उस का गंजपन फ़ौरन जाता रहा और उसे ख़ूबसूरत बाल दे दिये गए। फिर फ़रिश्ते ने उस से पूछा : तुम्हें किस क़िस्म का माल ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : गाय। उसी वक़्त एक गाभन गाय उसे दे दी गई और फ़रिश्ते ने उस से कहा : अल्लाह पाक तुझे इस में बरकत अ़ता फ़रमाए।

---

1 ··· रावी का शक है, मगर बरस वाले और गंजे में से एक ने ऊंट कहा, दूसरे ने गाय।

फिर वोह फ़रिश्ता इन्सानी शक्ल में अन्धे के पास पहुंचा और उस से पूछा कि तुझे कौन सी चीज़ सब से ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : अल्लाह पाक मुझे बीनाई अ़ता कर दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं। फ़रिश्ते ने उस के चेहरे पर हाथ फेरा तो अल्लाह पाक ने फ़ौरन उस को बीनाई अ़ता फ़रमा दी। फिर फ़रिश्ते ने उस से पूछा : तुम्हें किस क़िस्म का माल पसन्द है ? वोह बोला : बकरी। उसे एक गाभन बकरी दे दी गई और फ़रिश्ते ने उस को भी बरकत की दुआ़ दी और चला गया।

कोढ़ी, गंजे और अन्धे उन तीनों के यहां ऊंटों, गायों, और बकरियों के ख़ूब बच्चे हुए और नस्लें बढ़ीं, तीनों ख़ूब मालदार हो गए। जुज़ामी के यहां ऊंटों से वादी भर गई, गंजे के यहां गाइयों से वादी भर गई, अन्धे के यहां बकरियों से वादी भर गई।

अब वोही फ़रिश्ता कोढ़ी की शक्ल इख़्तियार कर के बत़ौरे इम्तिह़ान कोढ़ से सेह़तयाब होने वाले शख़्स के पास आया और उस से कहा : मैं एक मिस्कीन मुसाफ़िर हूं, मेरे सफ़र जारी रखने के वसाइल ख़त्म हो गए हैं, मेरे लिये आज पहुंचने की सूरत नज़र नहीं आती मगर येह कि अल्लाह पाक की मदद से और फिर तेरी मदद से, मैं तुझ से उस के नाम पर जिस ने तुझे दिलकश रंगो रूप, ह़सीनो जमील जिल्द और कसीर माल अ़ता किया है एक ऊंट का सुवाल करता हूं ताकि मैं अपना सफ़र जारी रख सकूं। वोह कहने लगा : मेरे ज़िम्मे बहुत सारे हुक़ूक़ हैं। इस पर फ़रिश्ते ने कहा : मैं तुझे जानता हूं, क्या तू वोही कोढ़ी नहीं जिसे लोग अछूत समझते और घिन करते थे ? और तू कौड़ी कौड़ी का मोह़ताज नहीं था ? फिर अल्लाह पाक ने तुझे येह हुस्नो जमाल और माल अ़ता किया। कोढ़ी बोला : ऐसा नहीं है मैं तो बाप दादा से ऐसा ही हूं। येह सुन कर फ़रिश्ते ने कहा : अगर तू झूट बोल रहा हो तो अल्लाह पाक तुझे फिर वैसा ही बना दे जैसा तू पहले था।

इस के बाद फ़रिश्ता गंजे के पास उसी की सूरत में गंज के साथ पहुंचा और इस से भी उसी त़रह़ सुवाल किया जिस त़रह़ जुज़ामी से किया था। इस गंजे ने भी वैसा ही जवाब दिया जैसा जवाब कोढ़ी ने दिया था। इस पर फ़रिश्ते ने वोही बात कही जो कोढ़ी को कही थी, यानी अगर तू झूट बोल रहा हो तो अल्लाह पाक तुझे फिर वैसा ही बना दे जैसा तू पहले था।

फिर फ़रिश्ता अन्धे के पास अन्धे ही की शक्ल में गया और कहने लगा : मैं अन्धा मोह़ताज मुसाफ़िर हूं, मेरे सफ़र जारी रखने के वसाइल ख़त्म हो गए हैं, आज मुझे पहुंचने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही मगर येह कि अल्लाह पाक की मदद से फिर तेरी मदद से, मैं उस अल्लाह पाक के वसीले से जिस ने तुझे बीनाई वापस की, तुझ से बकरी का सुवाल करता हूं जिस के ज़रीए मैं अपनी मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच सकूं। अन्धे ने जवाब दिया : बेशक मैं नाबीना था, अल्लाह पाक ने अपने फ़ज़्लो करम से मुझे बीनाई अ़ता फ़रमाई लिहाज़ा तुम जितनी बकरियां चाहो ले लो और जितनी चाहो छोड़ दो। ख़ुदा की क़सम ! तुम अल्लाह के नाम पर जो कुछ लोगे मैं उस पर ना गवारी का इज़्हार न करूंगा। फ़रिश्ते ने कहा : तू अपना माल अपने क़ब्ज़े में रख, बात येह है कि अल्लाह पाक की त़रफ़ से तुम तीनों का इम्तिह़ान लिया गया था, अल्लाह पाक तुझ से ख़ुश और तेरे दोनों साथियों कोढ़ी और गंजे से नाराज़ हो गया। (بخاری، 2/463، حدیث:3464ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे मुबारका से पता चला कि एह़सान फ़रामोशी और ना शुक्री बहुत बड़ा जुर्म है और जो एह़सान फ़रामोशी और ना शुक्री करता है वोह दुनिया में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और मह़शर में भी ज़िल्लत व रुस्वाई इस का मुक़द्दर बनती है। ज़रा ग़ौर कीजिये ! गंजा और कोढ़ी जो पहले बहुत तक्लीफ़ में थे जब उन्हें राह़त मिली तो वोह अल्लाह पाक को भूल गए, उस की राह में अपना माल देने से इन्कार कर दिया और झूट का भी सहारा लिया तो

आख़िरेकार ज़लीलो ख़्वार हो कर रह गए। आज कल भी बद क़िस्मती से अगर किसी से कोई नेक काम के लिये सुवाल करे तो लोग त़रह़ त़रह़ झूट बोलते हैं, मसलन मेरे पास गुन्जाइश नहीं है, मेरे साथ फ़ुलां और फ़ुलां मसाइल हैं, यूं कई झूट बोल कर टाल मटोल से काम लेते हैं। येह क्यूं नहीं सोचते कि जब अल्लाह पाक ने मुझे माल दिया है तो उस की राह में अपना माल ख़र्च कर के ढेरों सवाब कमाएं। हां ! अगर देने वाला सुवाल करने वाले से मुत़मइन न हो और समझता हो कि वोह फ़्रोड करेगा या इस की रक़म सह़ीह़ जगह ख़र्च न होगी तो फिर अगर्चे उसे न दे लेकिन इस ह़ालत में भी झूट का सहारा लेना जुर्म होगा लिहाज़ा अगर नहीं देना चाहता तो झूट बोले बग़ैर मना कर दे। बहरह़ाल आज हमारे मुआ़शरे में ना शुक्री की फ़ज़ा क़ाइम है। ना शुक्री आ़म क्यूं न हो कि जब शैत़ाने लई़न को बारगाहे इलाही से धुत्कारा गया तो उस ने अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ किया था : "मैं तेरे बन्दों को आगे पीछे और दाएं बाएं से बहकाऊंगा और तू उन में से अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा" जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में शैत़ान के इस क़ौल की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाता है :

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾

(پ8، الاعراف:17)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से और तू उन में अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा।

शुक्र गुज़ार बन्दे कम हैं

इसी त़रह़ अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : मेरे थोड़े ही बन्दे शुक्र गुज़ार होंगे, जैसा कि पारह 22 सूरए सबा की आयत नम्बर 13 में इरशादे रब्बुल आ़लमीन है : ﴿وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! वाक़ेई हक़ीक़ी मानों में शुक्र और सब्र करने वाले बन्दे बहुत कम हैं। अलबत्ता ज़बानी जमा ख़र्च बहुत ज़ियादा है, इसे यूं समझिये कि जिस तरह हमारे यहां बहुत से लोग दूसरों के सामने अपने मसाइबो आलाम का रोना रोते और तरह तरह के दुखड़े सुनाते हैं मसलन "साहिब ! क़र्ज़ा बहुत चढ़ गया है या फ़ुलां बीमारी है और डॉक्टर ऑप्रेशन का बोल रहा है वग़ैरा वग़ैरा" फिर जब ऐसों को तसल्ली दी जाती है और सब्र करने को कहा जाता है तो जवाब मिलता है : मैं तो सब्र ही कर रहा हूं। अब अगर कोई अपनी भड़ास निकालने के बाद कहे कि "मैं सब्र ही कर रहा हूं" तो इसे सब्र कहना दुरुस्त नहीं होगा। इसी तरह जब किसी की जेब कटती है तो वोह बिला ज़रूरत लोगों को बताता और जेब कतरे को ख़ूब गालियां निकालता है और फिर कहता है कि "मैं सब्र कर रहा हूं" तो येह सब्र नहीं हमाक़त है और इसे सब्र समझना इस की ख़ुश फ़हमी है।

सब्र अव्वल सदमे पर होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हदीसे पाक में है : सब्र अव्वल सदमे पर होता है। (بخاری، 1/441، حدیث:1302) बाद में तो सब्र आ ही जाता है। देखिये ! जब किसी के यहां मय्यित होती है तो घर वाले फूट फूट कर रोते, मगर مَعَاذَاللہ बाज़ लोग आहो ज़ारी करते हुए हाथ पांव चलाते, बाल नोचते और कपड़े फाड़ डालते हैं येह हराम हैं। (फ़तावा हिन्दिया, 1/167 मफ़्हूमन) फिर वक़्त गुज़रने के साथ साथ आहिस्ता आहिस्ता नॉर्मल हो जाते हैं।

हमारे यहां गुजराती में कहावत है : "दुख नुं औषध दहाड़ा" यानी ग़म की दवा अय्याम हैं यानी जूं जूं दिन गुज़रते जाते हैं ग़म मुन्दमिल हो जाता है, ज़ख़्म भर जाता है।

इसी तरह आवाज़ से रोना मना है अलबत्ता आवाज़ बुलन्द न हो तो रोने की मुमानअत नहीं। (الجوہرۃ النیرۃ، ص139)

याद रखिये ! सब्र का सवाब जभी मिलेगा कि बन्दा अव्वल सदमे पर सब्र करे और कोई बे सब्री वाला जुम्ला ज़बान से न निकाले लिहाज़ा मय्यित वग़ैरा ग़म के मौक़अ पर आदमी अपने आप को क़ाबू में रखे और बे सब्री का मुज़ाहरा हरगिज़ न करे, जब ही तो सब्र है वैसे भी दिनों के गुज़रने के साथ सब्र आ ही जाता है। हक़ीक़ी सब्र येह है कि वाक़ेई आप की तबीअ़त ख़राब हो और कोई पूछे तो आप कहें "अल्लाह पाक का शुक्र है।" इन अल्फ़ाज़ के साथ साथ दिल की कैफ़िय्यत भी येही हो और कोई बे सब्री वाला जुम्ला ज़बान से अदा न होने पाए।

सब्र की फ़ज़ीलत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! सब्र बहुत बड़े अज्रो सवाब का बाइ़स है। क़ियामत के दिन सब्र करने वालों को जमा किया जाएगा तो एक बहुत बड़ा गिरोह जमा हो जाएगा और फिर अल्लाह पाक उन्हें बिला हिसाबो किताब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (الزہد لابن مبارک، ص226، حدیث:643 ملتقطاً)

साबिरीन व शाकिरीन बहुत कम हैं

अफ़सोस ! आज कल साबिरीन व शाकिरीन हैं कहां ? होंगे तो मज़ारों में होंगे। अब सूरते हाल येह है कि ज़रा सा कांटा छुभे या सर में दर्द हो जाए तो लोग आस्मान सर पर उठा लेते हैं। हमारे अस्लाफ़ का तर्ज़े अमल ऐसा नहीं था वोह ख़ुद भी मुसीबतों पर सब्र करते और दूसरों को भी इस की तल्क़ीन किया करते थे। इस ज़िम्न में अल्लाह पाक की नेक बन्दी हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا के साथ पेश आने वाला एक वाक़िआ सुनिये और अपने लिये सब्रो शुक्र का ख़ज़ाना इकट्ठा कीजिये, चुनान्चे एक मरतबा हज़रते राबिआ बसरिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا ने एक शख़्स को सर पर पट्टी बांधे देख कर इस का सबब पूछा तो उस ने अ़र्ज़ की : सर में बहुत दर्द है इस लिये पट्टी बांध रखी है। आप ने उस से फ़रमाया : तुम ने सेहतमन्दी

के शुक्राने की पट्टी कभी नहीं बांधी और एक दिन सर में दर्द क्या हुवा तुम ने शिकायत की पट्टी बांध ली है। (तज़्किरतुल औलिया, 1/72 मुलख़्ख़सन)

बुज़ुर्गाने दीन मुसीबत छुपाया करते थे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गों का त़रीक़ए कार था कि अगर उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचती तो बिला ज़रूरत उसे किसी पर ज़ाहिर नहीं करते थे, यहां तक कि बाज़ बुज़ुर्गों के ह़ालात में येह भी लिखा है कि जब वोह बीमार होते तो किसी को अपने पास मुलाक़ात के लिये नहीं बुलाते थे ताकि लोगों को उन का बीमार होना मालूम न हो सके। (احیاءالعلوم،4/362ماخوذاً)

इन्सान बड़ा ना शुक्रा है

बहरह़ाल येह तसव्वुफ़ का नुक्ता था जो अ़र्ज़ किया, तसव्वुफ़ दीन से हट कर नहीं, जो बात दीन से हट कर हो वोह ठीक नहीं, जोहला कहते हैं : हम तो फ़क़ीर हैं, शरीअ़त और है और त़रीक़त और है । येह ह़माक़त हो सकती है ऐसी कोई त़रीक़त नहीं जो शरीअ़त से जुदा हो ! उन को अलग अलग नहीं कहा जा सकता, जो ऐसा कहे वोह फ़्रोडिया है। जिस को देखो वोह यूं कहता है : जी फ़क़ीर ने यूं किया, फ़क़ीर ने यूं कहा, लिखा वग़ैरा ह़ालांकि फ़क़ीर होना बहुत बड़ी बात है मेरे और आप जैसे फ़क़ीर तो गली गली में फिरते हैं ह़क़ीक़ी फ़क़ीर की तारीफ़ बड़ी बुलन्द है, फ़क़ीर में 4 हुरूफ़ हैं : ف،ق،ی और ر। उन में "ف" से मुराद फ़ाक़ा यानी भूका रहना, आप तो 4 बार डट कर खाते हैं, आप कैसे फ़क़ीर हो गए ? आप ने कभी ف का भी ह़क़ अदा नहीं किया, रोज़ा आप से एक नहीं रखा जाता, आप फ़क़ीर और सूफ़ी कब से बन बैठे ? और फ़क़ीर अपने मुंह से अपने आप को फ़क़ीर नहीं कहता वोह तो लोग उस के अफ़्आ़ल और किरदार की वज्ह से उस को फ़क़ीर कहते हैं, फ़ाक़ा शायद आप के ख़ानदान में से कभी किसी ने नहीं किया होगा और आप

फ़क़ीर बन बैठे, फिर "ق" से मुराद क़नाअ़त है, यानी जितना मिल जाए इस पर सब्र करना मसलन किसी से कहा जाए आप की तनख़्वाह कितनी है ? तो जवाब मिलता है जी 1500 है, पूरा नहीं होता, दुआ करो 2000 हो जाए, 2000 मिल जाएं तो कहेंगे : 2500 मिल जाएं। मेरे आक़ा शैख़ सअ़दी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बड़ी प्यारी बात फ़रमा गए : "تونگری بہ دل است نہ بہ مال" यानी मालदारी दिल से होती है माल से नहीं। मालदार तो नमरूद, फ़िरऔन, क़ारून और अबू जहल भी था, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बुज़ुर्गों का क़ौल नक़्ल करते हैं : दौलत पैसा दिरहमो दीनार सांप और बिच्छू हैं इस को वोही हाथ लगाए जो सांप और बिच्छू से बचने का मन्तर जानता हो, किसी ने अ़र्ज़ किया : इस का मन्तर क्या है ? तो फ़रमाया : इस का मन्तर येह है कि ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल करे और मौक़अ़ व मह़ल पर उस को ख़र्च करे।

(مکاشفۃ القلوب، ص143 ماخوذاً)

पहले के लोग ह़लाल त़रीक़े से माल ह़ासिल करते थे, अब कौन ऐसा करता है येह हम नहीं जानते। आज कसीर मालदार वोह हैं जो चोरियां करते होंगे रिश्वत और सूद का लेन देन और मालूम नहीं क्या क्या करते होंगे, अल्लाह पाक हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़म फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

आप की येह ख़्वाहिश होगी कि रातों रात 5 लाख का इन्आ़मी बॉन्ड लग जाए या इस चक्कर में होंगे कि रातों रात अमीर बन जाएं। बहरह़ाल इस का मन्तर कोई नहीं जानता इस लिये जितना सांप बिच्छू का ज़ख़ीरा यानी मालो दौलत कम हो उतना अच्छा है। इसी त़रह़ आगे ह़ज़रते शैख़ सअ़दी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "بزرگی بہ عقل است نہ بہ سال" यानी बुज़ुर्गी अ़क़्ल से होती है न कि उ़म्र से यानी ऐसा नहीं कि जो उ़म्र रसीदा है वोही बुज़ुर्ग है सफ़ेद बाल हो गए कमर झुक गई और गालियां भी दे रहे हैं फिर भी बुज़ुर्ग हैं ऐसा नहीं।

फ़ी ज़माना शुक्र गुज़ार बन्दा तलाश करना बहुत मुश्किल है, जैसा कि अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक में ग़ाज़ियों के घोड़ों की क़सम याद फ़रमाने के बाद इन्सान के ना शुक्रा होने को बयान फ़रमाया है, चुनान्चे इरशाद होता है :

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾
فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾
وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۭ﴿۸﴾ (پ30، العٰدیٰت:1-8)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क़सम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई फिर पत्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर फिर सुब्ह होते ताराज करते हैं फिर उस वक़्त ग़ुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है और बेशक वोह उस पर ख़ुद गवाह है और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर कर्रा है।

अपने ना शुक्रा होने पर ख़ुद गवाह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक ने जहां इन्सान के ना शुक्रा होने को बयान फ़रमाया है वहीं येह भी बयान फ़रमाया है कि इन्सान अपने ना शुक्रा होने पर ख़ुद गवाह है। इस त़रह़ कि इन्सान अपने अफ़्आल और किरदार के ज़रीए अपने ना शुक्रा होने पर ख़ुद गवाह है। देखिये ! हम ज़बान से तो कहते हैं कि अल्लाह पाक का शुक्र है, लेकिन परेशानियों की वज्ह से दिल में भरी हुई भड़ास भी निकाल देते हैं, ऐसा ही हमारा शुक्र है। अगर हम शुक्र गुज़ार बन्दे होते तो हमें माल ह़ासिल करने के लिये इतनी भाग दौड़ मारा मारी न करनी पड़ती जितनी हम करते हैं। हम सह़ीह़ मानों में न अल्लाह पाक का शुक्र अदा करते हैं और न सब्र करते हैं।

माल की मह़ब्बत में शदीद

आह ! इन्सान ना शुक्रा होने के साथ साथ माल की मह़ब्बत में बहुत शदीद भी है, चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۭ ﴾

(پ30، العٰدیٰت:8) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर करा है।"

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने बयान फ़रमाया है कि इन्सान इ़बादत के मुआ़मले में कमज़ोर मगर माल की मह़ब्बत में मज़बूत है।

(تفسیر کبیر، پ30، العٰدیٰت، تحت الآیۃ:8، 11/262)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि इन्सान नेकियों के मुआ़मले में सुस्त और दौलत के मुआ़मले में चुस्त है। उसे यूं समझिये कि अगर किसी से कहा जाए कि एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने से दस रह़मतें नाज़िल होती हैं, दस गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, दस दरजात बुलन्द होते हैं और दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा लिहाज़ा एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ लीजिये बड़ी फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी, शायद वोह नहीं पढ़ेगा। अगर येह बात अख़बार में छपवा दी जाए कि जो नौचन्दी शबे जुमुआ को घर के किसी कोने में बा वुज़ू दो ज़ानूं बैठ कर सर झुकाए एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा आइन्दा प्राइज़ बॉन्ड की क़ुरआ अन्दाज़ी में इस का पांच लाख का इन्आ़म निकलेगा तो अब बैठे बैठे किसी की रीढ़ की हड्डी अकड़ जाए या कोई शूगर, दिल या दमे का मरीज़ हो लाज़िमी पढ़ेगा चाहे उसे एम्बुलेन्स में डाल कर हस्पताल ही क्यूं न ले जाना पड़े क्यूंकि पैसों का मुआ़मला है।

इसी त़रह़ बहुत से लोग अपनी मुलाज़मत का ग्रेड बढ़वाने के लिये तावीज़ात लेते और लम्बे लम्बे वज़ीफ़े करते हैं लेकिन मह़ज़ सवाब कमाने की निय्यत से एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने से कतराते हैं।

याद रखिये ! बाज़ लोगों की मौत की वज्ह उन का माल होता है। आए दिन अख़बारात में इस त़रह़ की ख़बरें छपती रहती हैं कि "प्राइज़ बॉन्ड बेचने वालों को डाकुओं ने गोली मार कर प्राइज़ बॉन्ड छीन लिये, फ़ुलां बैंक के अ़मले को डाकुओं

ने फ़ायरिंग का निशाना बनाया और रक़म लूट कर ले गए वग़ैरा वग़ैरा" जब कि ग़रीब इन्सान डाकुओं की गोलियों का निशाना बहुत कम बनते हैं।

हुसूले माल के लिये दीन दाव पर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ठन्डे दिल से सोचो ! जिस माल के हुसूल के लिये इन्सान अपने दीन तक को दाव पे लगाता है, झूट बोलता है, रिश्वत लेता है यहां तक कि सूद का भी लिहाज़ नहीं करता, अफ़सोस ! एक दिन इस माल को छोड़ कर दुनिया से रुख़्सत हो जाता है। आप कितना जियोगे साठ साल, सत्तर साल, अस्सी, नव्वे, सौ साल या ज़ियादा से ज़ियादा सवा सौ साल तक ही जियोगे, फिर उम्र के आख़िरी हिस्से में अन्धे, बहरे और कमज़ोर हो जाओगे, बिस्तर पर पड़े रहोगे। पिछले दिनों अख़बार में आया था कि एक सौ बत्तीस (132) साल के बूढ़े या बुढ़िया का इन्तिक़ाल हो गया, शायद सब से उम्र रसीदा येही हो दुनिया में। माज़रत के साथ इतना आप नहीं जियोगे। 132 साल जीने वाले ने अस्ल माल खाया होगा, आप ने तो अभी से जवानी में चश्मा पहना हुवा है।

आज हम ने बहुत तरक़्क़ी कर ली है, स्क्रीन देखने की वजह से हमारी नज़र पर बहुत ज़ियादा असर पड़ता है। इसी तरह जब गाड़ियों के हॉर्न बजते हैं तो उन की आवाज़ कानों से टकराती है जिस की वजह से सुनने की क़ुव्वत आहिस्ता आहिस्ता कमज़ोर होती चली जाती है क्यूंकि कान के लिये आवाज़ सुनने की एक Limit है उस से ज़ियादा तेज़ आवाज़ कान के पर्दे से टकराते रहेंगे तो येह ख़राब हो जाएंगे। इसी तरह हर घर में गाने बजते हैं और येह सुनना भी गुनाह है और गुनाह का असर सेहत पर भी पड़ता है। बद निगाही और तांक झांक करने से नज़र कमज़ोर होती है और गाने बाजे सुनने से क़ुव्वते समाअ़त पर असर पड़ता है। (حلیۃ الاولیاء، 7/385 ماخوذاً)

याद रहे ! जहां दुनिया में बद निगाही से नज़र कमज़ोर होती है वहीं मरने के बाद इस जुर्म के सबब आंखों में कील ठोंक दिये जाएंगे। (معجم کبیر، 8/156، حدیث: 7666 ملتقطاً)

एक रिवायत में येह भी है कि जो शख़्स अपनी आंख को ह़राम से पुर करता है अल्लाह पाक बरोज़े क़ियामत उस की आंख में जहन्नम की आग भर देगा। (مکاشفۃ القلوب، ص10) इसी त़रह़ जो लोग गाने बाजे सुनते हैं उन के कानों में कील ठोंक दिये जाएंगे। (معجم کبیر، 8/156، حدیث:7666ملتقطاً) ज़रा ग़ौर करें ! आज अगर कान में तिन्का चुभ जाए तो बरदाश्त नहीं होता, बरोज़े क़ियामत अगर कानों में कील ठोंक दिये गए तो कैसे बरदाश्त कर पाएंगे ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने सूरए आ़दियात की चन्द आयाते मुबारका से मुतअ़ल्लिक़ कुछ तफ़्सील सुनी मज़ीद आयाते मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

اَفَلَا یَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِی الْقُبُوْرِۙ(۹) وَ حُصِّلَ مَا فِی الصُّدُوْرِۙ(۱۰) اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ یَوْمَىٕذٍ لَّخَبِیْرٌ(۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे जो क़ब्रों में हैं और खोल दी जाएगी जो सीनों में है बेशक उन के रब को उस दिन उन की सब ख़बर है। (پ30، العٰدیٰت:9-11)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अपने रोज़ाना के आमाल में बेहतरी लाने के लिये अपनी ज़िन्दगी का ह़िसाब लगाइये मसलन हम दुनिया में ज़ियादा से ज़ियादा साठ साल गुज़ारेंगे। अब येह देख लीजिये कि आ़म त़ौर पर आराम का वक़्त औसत़न यौमिया आठ घन्टे है, अगर रोज़ाना आठ घन्टे सोने का ह़िसाब लगाया जाए तो साठ साल में से बीस साल तो सोने में गुज़र जाएंगे और बाक़ी चालीस साल दूसरे कामों के लिये रह जाएंगे। अब ग़ौर कीजिये कि उन चालीस सालों में हम क्या क्या करेंगे ? फिर उस ह़वाले से भी सोचिये कि हमें क़ब्र में कितना अ़र्सा रहना है ? इस का भी ह़िसाब लगा लें। इसी त़रह़ उन लोगों के बारे में सोचिये कि जो हज़ारों साल से क़ब्रों में हैं और उन में से कोई भी वापस लौट कर दुनिया में नहीं आया। अब अपना येह

ज़ेहन बनाइये कि एक दिन हमें भी मौत आएगी और हम भी कितने लम्बे अ़र्से तक क़ब्र में रहेंगे कुछ पता नहीं है। नीज़ हमें भी वोही कफ़न दिया जाएगा जो फ़ुटपाथ पर पड़ी लावारिस मय्यित को दिया जाता है। जो माल हम ने कमाया और जिसे ह़ासिल करने में हम ने बहुत भाग दौड़ की वोह हमारी औलाद के लिये रह जाएगा और हमारे किसी काम न आएगा।

इन्सान के तीन माल

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारा माल वोही है जिसे हम ने खा लिया, पहन लिया या फिर अल्लाह पाक की राह में ख़र्च कर दिया जैसा कि ह़दीसे पाक में है : इन्सान कहता है कि मेरा माल, मेरा माल, उस के तो तीन माल हैं, पहला माल उस ने खा कर हज़म कर लिया, दूसरा माल उस ने पहन कर पुराना कर लिया, तीसरा माल अल्लाह की राह में दे कर आगे को चलता कर दिया। (مسلم، ص1210، حدیث:7422) येह तीन त़रह़ के माल इन्सान के अपने हैं बक़िय्या माल उस के वारिसों का है जो उस के माल से अ़य्याशी करेंगे।

ऐ काश ! हम अपनी औलाद को क़ुरआने पाक पढ़ा कर और दीन का मुबल्लिग़ और नमाज़ी बना कर इस दुनिया से गए होते ताकि हमारी औलाद हमारे लिये दुआ करे और ईसाले सवाब का एहतिमाम करे। याद रखिये ! जो नेक औलाद छोड़ कर दुनिया से रुख़्सत होता है उस की औलाद उस के लिये सवाबे जारिया का सबब बन जाती है लेकिन आज कल नेक औलाद छोड़ कर कौन जाता है ? और अपनी औलाद को नेक बनाने के लिये कोशिश कौन करता है ?

आज साह़िबे औलाद होने की दुआ तो सभी मांगते हैं और इस के लिये तावीज़ात भी लेते हैं लेकिन नेक औलाद की दुआ कोई नहीं मांगता है। जिस त़रह़ लोग मह़ज़ बे रोज़गारी ख़त्म होने और रोज़गार मिलने की दुआ तो मांगते हैं लेकिन ह़लाल रोज़ी की दुआ कोई कोई मांगता है। शैत़ान ने ज़बान पर कड़वी लगाम लगा

दी है, दिमाग़ पर ताले पड़ गए, येह किसी की सोच नहीं है कि ह़लाल रोज़ी मांगें। याद रखिये ! जब भी रोज़ी मांगें तो ह़लाल रोज़ी मांगें और जब भी औलाद मांगें तो नेक औलाद मांगें। बद क़िस्मती से आज कल औलाद के नेक होने की फ़िक्र बहुत कम लोगों को होती है, आ़म त़ौर पर मां बाप की येही सोच होती है कि ऐसी औलाद हो जो दुन्यवी मालो दौलत कमा कर दे और जदीद ज़माने के ह़िसाब से चले।

अगर औलाद ख़ुद से नेक बनने की कोशिश करे तो (गोया) क़ियामत क़ाइम हो जाती है, वालिदैन को तश्वीश होती है कि कहीं मौलवी न बन जाए और फिर हम से इस त़रह़ के मुत़ालिबात न शुरूअ़ कर दे कि पांचों नमाज़ें पढ़ा करो और नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के लिये उठा करो वग़ैरा वग़ैरा।

हम कहते हैं अपने बच्चे को दावते इस्लामी के इज्तिमाअ़ में भेज दो हम इसे नेक बना देंगे, लेकिन लोग कहते हैं नहीं जनाब ! हम अपने बच्चे को मौलवी नहीं बनाएंगे। उन से पूछा जाए कि आप कलिमा कौन सा पढ़ते हैं तो कहेंगे : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ। उन को कहा जाए आप और हम जिस का कलिमा पढ़ते हैं हम दावते इस्लामी वाले आप की औलाद को उसी की सुन्नतें सिखाएंगे। मगर लोगों को पता है कि फिर येह हमारी औलाद को कहेंगे कि पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ा करो फ़ज्र में भी उठा करो। जब कि हमारा बच्चा सुब्ह़ से रात तक काम में होता है फिर सुब्ह़ जल्दी उठेगा तो नींद पूरी नहीं होगी, बीमार हो जाएगा वग़ैरा वग़ैरा। नहीं ! नहीं ! हम तो अपना बच्चा नहीं देंगे और हम इसे फ़ज्र में नहीं उठने देंगे। हमारे मुआ़शरे में बाज़ ऐसे लोग भी मौजूद हैं कि जो अपनी औलाद को दीन पर अ़मल करने से रोकते हैं और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ नहीं रखने देते और दाढ़ी रखने पर त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें पहुंचाते हैं। अफ़सोस ! आज सुन्नत पर चलने वाला मज़लूम बन गया है !

इस्लाम तेरे चाहने वाले न रहे जिन का तू चांद था अफ़सोस वोह हाले न रहे

क़ियामत के दिन अल्लाह पाक हुक्म देगा कि जन्नतियों और जहन्नमियों को अलग अलग किया जाए तो अ़र्ज़ की जाएगी या अल्लाह कितनों को कितनों से अलग किया जाए ? अल्लाह पाक फ़रमाएगा : एक हज़ार में से नौ सौ निनान्वे जहन्नमियों को निकाल दो। (ترمذی، 5/113، 114، حدیث:3179 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज मुसलमान दीन से कितना बरगश्ता (रू गर्दानी करने वाला) हो गया है, किस क़दर दीन से दूर भागता चला जा रहा है, बन्दा नमाज़ नहीं पढ़ता, दाढ़ी नहीं रखता, झूट बोलता है, रिश्वत लेता है, सब कुछ करता है फिर भी ख़ुश फ़हमी में है और ख़ुद को अच्छा समझता है। अफ़सोस ! आज वालिदैन अपनी औलाद को फ़िल्मों ड्रामों और दीगर गुनाहों में मुब्तला देखते हैं मगर उन्हें टोकते नहीं, ऐसों को डरना चाहिये कि अपनी औलाद को बुराई से न रोकने के सबब अगर अल्लाह पाक नाराज़ हो गया तो उस की पकड़ बहुत सख़्त है, इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है :

बेटे को नर्मी से समझाने पर पकड़

बनी इसराईल के एक आ़लिम साहिब वाज़ फ़रमा रहे थे, उन का बेटा भी इस मह़फ़िल में मौजूद था, उस ने एक लड़की को घूरा तो उस आ़लिम ने कहा : "ऐ बेटे सब्र कर।" येह कहना था कि वोह आ़लिम अचानक मिम्बर से गिरा और उस की हड्डियां बाज़ जगहों से टूट गईं और ग़ैब से आवाज़ आई कि अपने लड़के के गुनाह पर क्या इतनी तम्बीह काफ़ी थी ? तुम ने इसे सख़्ती से क्यूं नहीं रोका ? याद रखो ! तुम्हारी नस्ल से क़ियामत तक कोई सिद्दीक़ पैदा नहीं होगा।

(حلیۃ الاولیاء، 2/422 حدیث:2823 ملتقطا)(احیاء العلوم، 2/383)

अफ़सोस ! आज औलाद को साथ बिठा कर गुनाह किया जाता है, बाप अपनी जवान औलाद को अपने साथ बिठा कर फ़िल्म दिखाता है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर करें ! वोह लड़का जिस ने सिर्फ़ एक लड़की को घूरा, अगर्चे बाप ने उसे मना भी किया लेकिन जैसा मना करना चाहिये था वैसा मना नहीं किया तो उस पर येह अ़ज़ाब नाज़िल हुवा कि क़ियामत तक उस की नस्ल से कोई सिद्दीक़ पैदा न होगा। ज़रा सोचिये ! उस बाप का क्या ह़श्र होगा जो अपने बच्चों को फ़िल्में ड्रामे दिखाता है ? अल्लाह पाक हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब भी वक़्त है, अभी मौत नहीं आई, गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और तसव्वुर ही तसव्वुर में अपनी आख़िरत के बारे में इस त़रह़ ग़ौर कीजिये कि मसलन मेरी उ़म्र 36,37 साल हो चुकी, यानी एक तिहाई ज़िन्दगी गुज़र चुकी, मेरे सर पर मौत मन्डला रही है, अ़न्क़रीब मुझे भी कफ़न पहनाया जाएगा, कांधों पर उठा कर क़ब्रिस्तान ले जाया जाएगा, अन्धेरी क़ब्र में दफ़्नाया जाएगा और मालूम नहीं कि फिर कोई क़ब्र देखने भी आएगा या नहीं ? अगर ज़िन्दगी में कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो बहुत से लोग मुरव्वत में जमा हो जाते हैं। नीज़ मुम्किन है जनाज़े में भी शरीक हो जाएं लेकिन थोड़े अ़र्से बाद सब भूल जाते हैं।

उ़म्र भर कौन किसे याद करता है
वक़्त के साथ ख़यालात बदल जाते हैं

आह ! इस के बाद क़ब्र में सैंकड़ों या हज़ारों साल रहना पड़ेगा और क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल का होगा। (تفسیر درمنثور، پ29، المعارج، تحت الآیۃ:4، 8/279) याद रखिये ! क़ब्र की तय्यारी इस दुनिया में रहते हुए करनी है, लिहाज़ा क़ुरआने पाक की इस आयते मुबारका को मश्अ़ले राह बना लीजिये اِنْ شَآءَاللہ दुनिया और आख़िरत दोनों संवर जाएंगी, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَاللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ﴾ (پ26، الحجرات:13) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक

अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है। इस में कौन किस ज़बान व नस्ल का है इस का कोई अ़मल दख़्ल नहीं, जो परहेज़गार है वोही अल्लाह पाक के नज़्दीक अच्छा और मुअ़ज़्ज़ज़ है।

ऐ अल्लाह पाक ! हम पर करम फ़रमा कि हमारी गुनाहों की आ़दतें निकल जाएं और हम तेरे शुक्र गुज़ार बन्दे बन जाएं।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	01	इन्सान बड़ा ना शुक्रा है	08
अ़जीब आज़माइश	02	अपने ना शुक्रा होने पर ख़ुद गवाह	10
शुक्र गुज़ार बन्दे कम हैं	05	माल की महब्बत में शदीद	10
सब्र अव्वल सदमे पर होता है	06	हुसूले माल के लिये दीन दाव पर	12
सब्र की फ़ज़ीलत	07	इन्सान के तीन माल	14
साबिरीन व शाकिरीन बहुत कम हैं	07	बेटे को नर्मी से समझाने पर पकड़	16
बुज़ुर्गाने दीन मुसीबत छुपाया करते थे	08	❀❀❀❀❀❀	❀

अगले हफ़्ते का रिसाला

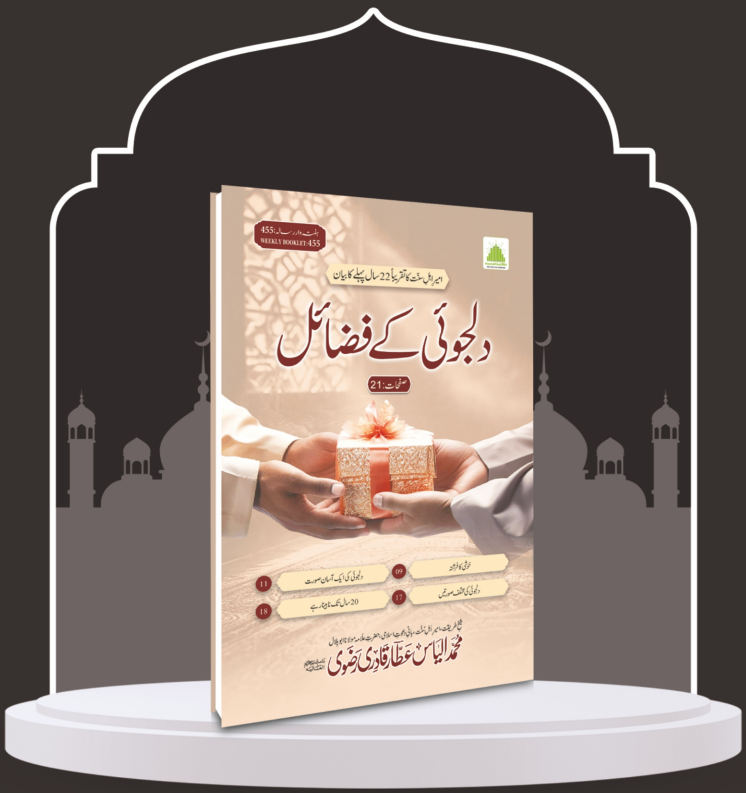

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025